"मराठी कविता में व्यक्त राम वनगमन की मूल्यात्मक निष्पत्ति"

रामकथा और कृष्णकथा लोक-अनुस्मृति की गहराई में जाकर प्रतिष्ठित हुई हैं। यह कथा हिन्दू-जैन-बौद्ध, आर्य-आर्येतर, भारतीय- बृहतर भारतीय, जम्बुद्वीप-द्वीपांतर भारत, सर्वत्र लोक विश्वास का अंग बनकर प्रतिष्ठित हुई हैं। यह ऐसा इतिहास है जो हमें धर्मपालन का धैर्य अपने आचरण से प्रकट करके पथ पे चलना सिखाता हैं। यह ऐसा काव्य है जो हमें संयम और परमात्मा के मिलन का आनंद देता है। यह ऐसा तत्वज्ञान हैं जो ब्रह्म के स्वरुप को व्यक्त करता हैं। यह सारी बाते हमें समाज के साथ साथ भारतीय भाषाओँ के साहित्य में भी दिखाई देती हैं। जिसमे मराठी भाषा का साहित्य भी हैं।

मराठी साहित्य में रामकथा का उद्देश भक्ति और मूल्यजीवन का उजागर करने के साथ साथ वीर रस की अभिव्यक्ति भी रही हैं। मराठी साहित्य में रामकथा पर लिखे हुए साहित्य में संत एकनाथ का 'भावार्थ रामायण', कृष्णदास मुद्गल का 'युद्धकांड', पंडित कवि मुक्तेश्वर का 'संक्षेप रामायण', संत रामदास का 'सुन्दरकाण्ड', पंडित कवि श्रीधर का 'रामविजय', पंडित कवि मोरोपंत का 'मंत्र रामायण', संत वेनाबाई का 'सीता स्वयंवर' आदि के साथ 'चौपाई रामायण'- गो.स.मोपटकर, 'साकीबध्द रामायण'-स.व.कुलकर्णी, 'अभंग रामायण'- म.ब.माहुलिकर, 'आर्य रामायण'- के.वि.गोडबोले, 'गीत रामायण'-गजानन माडगूळकर इसके सिवा गिरिधर स्वामी का 'अवध रामायण', 'मंगल रामायण', 'छदोरामायण', 'संकेत रामायण', 'करुणा रामायण' आदि उपलब्ध हैं। इन मराठी के साहित्यिक कृतियोंके रामचरित्र में वीरत्व, मानवीयता, शील,सदाचार, अवतारवाद और पुरुषोत्तम रूप प्रधान हैं ।

इस शोधालेख में उपरोक्त साहित्य में समाहित रामरूप को समां लेना मुश्किल हैं । इसलिए 'रामवनगमन' की घटना से जो शाश्वत जीवनमूल्य व्यक्त हुए है उनमे से कुछ मूल्यों के सन्दर्भ में विचार किया हैं। 'रामवनगमन' की इस घटना से जीवन के कष्टों की और सत्शील चरित्र निर्माण की दृष्टी से महत्वपूर्ण और सशक्त मूल्य व्यक्त हुए है। बदलते जीवन मूल्यों के साथ लुप्त होनेवाली यह दृष्टि और मानवमूल्यों को उजागर करने के लिए, राम और वनगमन की घटना का चिंतन होना आवश्यक है ।

राम के व्यक्तित्व विशेष के बारे में आनंद साधलेजी लिखते है, "राम ज्ञानी स्वात्माभिमानी, वीर, कठोर, सत्यव्रती और महान कर्मोद्योगी थे उनमें शक्ति, सामर्थ्य, साहस

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्साह, धैर्य, आत्मविश्वास आदि समस्त वीरोचित गुण थे । सामान्य व्यवहार में राम अत्यंत शिष्ट, सरल और सरस थे । वे सबके आत्मसम्मान का ध्यान रखते थे। और किसीको नीचा न दिखाकर सबको ही ऊपर उठाने का प्रयास करते थे। राम किसी भी अवस्था में शील- सभ्यता नहीं त्यागते थे।"

धर्म का पालन ही श्रीराम की जीवननिष्ठा थी। वनगमन के वक़्त भी इसी धर्मनिष्ठा का पालन श्रीराम ने बड़े कठोरता के साथ किया। रामायण में इसका वर्णन करते हुए संत एकनाथ कहते हैं -

"श्रीराम निववी सर्वांसी। तेने अति ताप दशरथासी ।

कैकयीने पाडिले अति भ्रान्तीसी। निजभाकेसी गोवोनी। ।।८५ ।।" (भावार्थ रामायण)

'रामायण' की पूरी कथा में 'रामवनगमन' की घटना चौकादेनेवाली, मनुष्य स्वभाव के अलग अलग आयाम सामने लानेवाली, जीवन के मूल्यों को प्रस्थापित करनेवाली हैं । इस घटना से वचन में बंधे हुए राजा दशरथ व्याकुल, हतबल हो जाते हैं। जिस स्थिति में श्रीराम को वनवास का आदेश दिया जाता है, उसमें कैकयी और मन्थरा के द्वारा क्रोध, मत्सर, असूया, द्वेष, कपट इन सबका तीव्रतम दर्शन होता है। कैकयी की इच्छा से और कैकयी के द्वारा ही वनगमन का यह आदेश दिया जाता है। राम को अपना माननेवाली कैकयी मंथरा के विषारी शब्दों से पलट जाति है। पुत्र भरत से  अँधा प्रेम जताते हुए सारे अयोध्या राज्य के दुःख का कारण बन जाती है।वह घडी जीवन को एक स्तर से यकायक दूसरे स्तर पे ले जानेवाली है। भोतिक सुख जिनके कदम चूमने ही वाला था ऐसे क्षणों में भी श्रीरामजी उतनी ही शांतिसे, सिर्फ पिताजी की आज्ञा का पालन करने के लिए उसकी तरफ पीठ करके वनगमन के लिए निकल पड़ते है । वह न तो पिताजी को दोष देते है और न ही  माता कैकयी को भी दोषी मानते हैं । देवयोग के कारण ऐसा हुआ ऐसा उनका मानना है। 'गीतरामायण' में  माडगूळकरजी उनके मनस्थिति चित्रित करते हुए लिखते है-

"'देवजात दुखे भरता दोष ना कुणाचा, पराधीन आहे जगती पुत्र मानवाचा"

पितृआज्ञा एक ऐसा मूल्य है जिसे पालन करने में कोई किन्तु-परन्तु मन में न रखते हुए निष्ठा से पालन अभिप्रेत है। वह आज्ञा मुझे सुखदायी है या पीड़ादायक यह बात कोई मायने नहीं रखती। कितनी तन्मयता से 'मै' उसे निभा सकता हूँ यह महत्वपूर्ण है। स्वयं श्रीरामजी की इस बारे में क्या धारणा है, यह  बताते हुए संत एकनाथ 'भावार्थ रामायण' में लिखते है-

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

"गुरुवचन पितृवचन । न करी तो पापी पूर्ण।

मनुष्यवेशे तो श्वान। काळे वादन तयाचे।। ११ ।।

यालागी पितृवचन अन्यथा। मी न करी वो सर्वथा।

त्रिसत्य सत्य हे तत्वता। विकल्प चित्ता धरू नको।। १४ ।।"

पिताजी के प्रति श्रीराम की निष्ठा तनिक भी कम नहीं होती। जन्मदात्री माता कौसल्या भी उन्हें रोक नहीं पाती बल्कि श्रीराम ही उन्हें पत्नीधर्म की याद दिलाकर राजा दशरथ के साथ रहने को कहते है। शोकाकुल अयोध्या नगरी को देखकर भी श्रीरामजी अपने निश्चय से विचलित नहीं होते। कर्तव्य का पालन बुद्धिपूर्वक तथा निष्ठापूर्वक करना महत्वपूर्ण है, भावनाओ में बह जाना ठीक नहीं, यह सिख पूरी नगरी को मिलती है। सुमंत को लौटानेवाले श्रीराम का पितृप्रेम व्यक्त करते हुए माडगूळकरजी लिखते हैं -

"अयोध्येस तू परत सुमंता

कुशल आमुचे कथुनी ताता,

पदवंदन करी माझ्याकरिता

तातचरण ते वंदनीय रे, शततीर्थांचे धाम"

श्रीरामजी के साथ यह पितृआज्ञा निभाने के लिए कोमल सीतामाता और शुर लक्ष्मण भी जिद करके वनगमन करते हैं । पितृआज्ञा के साथ साथ त्याग का मूल्य भी उजागर होता है। राजपद और सारे भोतिक सुखों का त्याग, आप्तजन, स्नेहीजन के प्रेममोह का त्याग केवल एक क्षण में श्रीराम ने किया। सुकुमार सीतामाताने भी रानीपद त्यागकर वनवास में भी पति का साथ देने में सुख माना। बलप्रयोग से रामजी का राज्याभिषेक करने की मनीषा और ताकद रखनेवाला भाई लक्ष्मण उनकी सेवा के लिए राजसुखों का त्याग करता हैं ।उनकी मानसिकता व्यक्त करते हुए आनंद साधले लिखते है-

तूते राज्य प्राप्त होता

मजसी तुझ्या वैभवी वाटा

तूते वनभोग प्राप्त होता

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

माता कौसल्या जो राजमाता बनकर दिन पलटने की प्रतीक्षा में थी ठसे तो पुत्र के प्रेममोह का त्याग करना पड़ता है। ठसी प्रेम से विवश होकर राजा दशरथ प्राणत्याग कर देते है। इन सभी घटनाओ में बेकसूर होनेवाले भरत श्रीराम को अयोध्या वापस लाने का प्रयास करते हैं ।ठनका मत व्यक्त करते हुए संत एकनाथ लिखते है,

"श्रीरामसेवा सुख संतुष्टी। सांडोनी राज्यलोभाची दृष्टी।

ते अभाग्य जन्मले सृष्टी। दुःखकोटी भोगावया।।३३।।"

राम के प्रति भक्ति और प्रेम होने के कारण भरत प्राणत्याग की बाते करते है । तब वाल्मीकि ऋषि राम के जीवन का गुह्य बताते है-

"ऐके भरता सावधान । सीता श्रीराम लक्ष्मण।

वनी वसावया हेचि कारण। जे श्रीरामे रावण वधावा।।९६।।"

वाल्मीकि संक्षेप में आगे की घटनाओं की जानकारी देते है, और फिर भरत राम के खडाऊं राजसिहासन पर स्थापित करके भरत अपना कर्तव्य निभाते है। मानो प्रेम और त्याग की महिमा ही यहाँ चल रही है।

मनुष्यों से दूर और प्रकृति के निकट रहने से प्रकृति की विविधता, सुन्दरता, श्रीरामजी का मन हर लेती है। प्रकृति के निकट ही मानवी जीवन अधिक सुन्दर, सुशील और समृद्ध होने का संकेत वह देते है।'गीतरामायण' में माडगूळकरजी लिखते है,

"या इथे लक्ष्मणा बांध कुटी

या मंदाकिनिच्या तटनिकटी

चित्रकूट हा, हेच तपोवन

येथे नांदती साधक, मुनिजन

सखे जानकी, करी अवलोकन

ही निसर्गशोभा भुलवी दिठी"

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

प्रकृति से एकरूप होकर रहने वाले राम, मानो मनुष्यजाति को सिखाते हैं, मनुष्य सृष्टि का एक घटक है ,सृष्टि का आनंद लेते हुए और उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मनुष्य को रहना चाहिए । इस वन में राम जी की सहायता करनेवाली गिलहरी, उनका स्वागत करने उत्सुक होनेवाले पशु-पंछी मराठी काव्य का विषय हुए है,

खार एकली लोळण घेते सागरतीरवारी

कण वाळूचे अंगा जडती त्यांची भरती करी

रामप्रभूनी जवळी घेतले उचलुनी खारीला

पाची बोटे उठती, देह तो सोन्याचा झाला (प्रसाद रामायण)

झाडीला मार्ग केसांनी

आणिले झर्‌याचे पाणी

शिंपला सडा पक्ष्यांनी

चोचींनी जळ आणून रे

शबरीची घ्यावी बोरे ४ (प्रसाद रामायण)

इस वनगमन की घटनाओं में नीची जाति के केवट, जटायु, शबरी, वानर जाति के सभीजन से बड़ा प्रेमपूर्वक, आदरपूर्वक बर्ताव करके श्रीराम ने संपूर्ण सृष्टि व्यवहार में आदर्श रखा हैं ।

जो सृष्टि का आनंद लेते हुए ना खुद रहते हैं न औरों को रहने देते हैं उन्हें दण्डित करना ही श्रीराम ने उचित समझा हैं । उन्होंने किया हुआ राक्षस संहार इसी बात की पुष्टि करता है। दण्डकारन्य के राक्षस संहार से लेके रावणवध तक की सारी घटनाओं से हम लोग परिचित हैं ही । इन सब घटनाओं के जरिये श्रीराम ने उत्तर-दक्षिण का संगम करके सांस्कृतिक एकात्मता प्रस्थापित कियी हैं। सीता की खोज में और रावन को दण्डित करने में जो जो प्रयास श्रीराम करते है उससे दक्षिण दिशा में रहनेवाली अलग अलग जातियोको इकठ्ठा करके, उनका स्वात्माभिमान जागृत करके, बलिष्ठ अन्यायी के खिलाफ प्रतिकूलता में भी लड़ने का साहस जगा देते है। इसमें मिले महाबली भक्तराज मारुती की भक्ति और शक्ति युगोयुगोंकी प्रेरणा बन चुकी है। रामवनगमन से हुई उत्तर-दक्षिण संगम की निष्पत्ति भारत के लिए एक सांस्कृतिक देन है। रावण

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पराभव के बाद उस राज्यपर कब्ज़ा न करते हुए बिभीषण को राज्याभिषेक करने में इस संस्कृति के औदार्य की परिसीमा व्यक्त होती है । शायद इसी लिए राम का वर्णन करते हुए महर्षि अगस्ति ने कहा था,

वेदशास्त्रांच्या निजयुक्ति। त्या परतल्या नेति नेति

श्रीराम केवल ब्रम्हामुर्ती। त्रिजगति निजपूज्य।। ३५।।

सन्दर्भ साहित्य


१. वाल्मीकि रामायण,(संपूर्ण रामायण की कथा सरल भाषा में),अनुवादक – आनंद साधले

२. भावार्थ रामायण, संपा.नरहरी विष्णुशास्त्री पणशीकर, यशवंत प्रकाशन, पुणे

३. गीत रामायण, ग.दी.माडगूळकर,प्रकाशन विभाग माहिती व नभोवानी मंत्रालय, भारत सरकार.

४. महाराष्ट्र रामायण, आनंद साधले, (खंड दूसरा,वनगमन कांड,अ-४) श्रीविद्या प्रकाशन.

५. प्रसाद रामायण, वि.म.कुलकर्णी,गो.य.राणे प्रकाशन, पुणे.

६.वाल्मीकि रामायण,( संपूर्ण रामायण की कथा सरल भाषा में), अनुवादक – आनंद साधले

७. रामायण महातीर्थम, कुबेरनाथ राय, भारतीय ज्ञानपीठ, नइ दिल्ली.

८. रामायनाचे वास्तव दर्शन, प्र. वि. पाठक, प्रज्ञा प्रकाशन, ठाणे.

९. रामकथा और लोकसाहित्य, जय नारायण कौशिक.

१०. वाल्मीकि रामायण, भालबा केळकर, वरदा बुक्स, पुणे.



प्रा. डॉ. वृंदा देशपांडे-जोशी,

सचिव,देवगिरी प्रान्त शाखा,अखिल भारतीय साहित्य परिषद्.



Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सहायक प्राध्यापक, मराठी विभाग,

सरस्वती भुवन कला व वाणिज्य महाविद्यालय, औरंगाबाद,महाराष्ट्र.

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)